<u>राज्य सभा</u>

अतारांकित प्रश्न संख्या 312

12 दिसंबर, 2018 को उत्तर के लिए

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आर.आई.एन.एल.) का पुनरुद्धार

312. श्री परिमल नथवानीः

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आर॰आई॰एन॰एल॰) के पुनरुद्धार हेतु एक समिति गठित की है;

(ख) यदि हां, तो इसके संघटन और उद्देश्यों सहित तत्संबंधी ब्यौरा और पुनरुद्धार योजना के क्रियान्वयन की स्थिति क्या है;

(ग) क्या यह संयंत्र नुकसान झेल रहा है अथवा लाभ अर्जित कर रहा है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) सरकार द्वारा इस संयंत्र की प्रचालनगत दक्षता और लाभकारिता को बढ़ाने के लिए क्या-क्या कदम उठाए गए हैं?

<u>उत्तर</u>

इस्पात राज्य मंत्री (श्री विष्णु देव साय)

(क) और (ख): राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल) और स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के पुनरुद्धार हेतु इस्पात मंत्रालय, पीएसयू के सदस्यों तथा तकनीकी विशेषज्ञों को शामिल करते हुए एक समिति गठित की गई। समिति के विचारार्थ विषयों में आरआईएनएल की उत्पादन में बढ़ोत्तरी, बिक्री तथा वित्तीय स्थिति में सुधार लाने पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ ही योजना की रूपरेखा तैयार करना भी शामिल है। समिति द्वारा किए गए विभिन्न विचार-विमर्शों के परिणामस्वरूप, आरआईएनएल ने जुलाई, 2017 में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) तैयार किया। एमओयू में विभिन्न परियोजनाओं/परिचालनों/लागतों से संबंधित कार्य-योजना तथा लक्ष्यों पर विस्तृत रोडमैप तैयार करने के साथ-साथ एमओयू

के तहत निर्धारित समय-सीमा के अनुसार उत्पादन, विपणन निष्पादन इत्यादि के लक्ष्य प्राप्त करने भी शामिल हैं।

(ग): वर्ष 2017-18 में कंपनी ने गत वित्तीय वर्ष की तुलना में 31% की वृद्धि के साथ 16,618 करोड़ रुपये के बिक्री कारोबार के लक्ष्य को प्राप्त किया। वर्ष 2017-18 में कंपनी को 1369 करोड़ रुपये की शुद्ध हानि हुई। बाजार स्थिति में सुधार होने के साथ ही, वर्ष 2017-18 में कंपनी 346 करोड़ रुपये की धनात्मक सकल मार्जिन दर्ज करने में सफल हो पायी है। कंपनी ने वर्ष 2018-19 की प्रथम छमाही (अप्रैल-सितंबर, 2018) में 89.39 करोड़ रुपये (अनंतिम) का कर-पश्चात् लाभ दर्ज किया है।

(घ): इस्पात एक नियंत्रणमुक्त क्षेत्र है और इस्पात क्षेत्र के लिए सरकार की भूमिका सुविधाप्रदाता के रूप में है। आरआईएनएल द्वारा किए गए प्रयासों में संयंत्र की प्रचालनगत क्षमता और लाभप्रदता बढ़ाने के साथ-साथ कोल ब्लेंड्स का अधिकतम उपयोग करना और कोकिंग कोल के विक्रेता आधार को बढ़ाना, कैप्टिव पॉवर जेनरेशन को अधिकतम करना, उच्चतर लाभ हेतु उच्च गुणवत्ता वाले मूल्यवर्धित इस्पात का उत्पादन, कीमती कोक, निम्नतर कोक दर, बढ़ी हुई श्रम उत्पादकता इत्यादि के आंशिक प्रतिस्थापन के रूप में ब्लास्ट फर्नेस उत्पादकता, पुल्वराईज्ड कोल इंजेक्शन जैसे तकनीकी-आर्थिकी पैरामीटर्स में सुधार करना भी शामिल हैं।

*****